Q. No.भारत में गरीबी एवं बेरोज़गारी की समस्याओं पर चर्चा कीजिए तथा समाधान सुझाइए

भारत एक विकासशील देश है, जिसने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है। आज भारत विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है, फिर भी गरीबी (Poverty) और बेरोज़गारी (Unemployment) जैसी समस्याएँ देश के समक्ष बड़ी चुनौती बनी हुई हैं। ये समस्याएँ केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और मानवीय विकास से भी जुड़ी हुई हैं। किसी भी देश की वास्तविक प्रगति तभी संभव है जब प्रत्येक नागरिक को सम्मानजनक जीवन, पर्याप्त आय, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा रोजगार के अवसर उपलब्ध हों।

गरीबी और बेरोज़गारी एक-दूसरे से गहराई से जुड़ी हुई समस्याएँ हैं। बेरोज़गारी के कारण व्यक्ति की आय कम हो जाती है, जिससे वह गरीबी की स्थिति में पहुँच जाता है। दूसरी ओर गरीबी के कारण व्यक्ति को अच्छी शिक्षा, पोषण, स्वास्थ्य सेवाएँ और कौशल प्रशिक्षण नहीं मिल पाता, जिसके कारण वह रोजगार प्राप्त करने में असफल रहता है। इस प्रकार दोनों समस्याएँ एक दुष्चक्र (Vicious Circle) का निर्माण करती हैं। भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश में इन समस्याओं का समाधान राष्ट्रीय विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

गरीबी का अर्थ एवं अवधारणा

गरीबी वह स्थिति है जिसमें व्यक्ति अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं–भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छ पेयजल तथा सम्मानजनक जीवन–की पूर्ति करने में असमर्थ होता है। गरीबी केवल आय की कमी नहीं है, बल्कि अवसरों, संसाधनों और सामाजिक सुरक्षा के अभाव का भी प्रतीक है।

विश्व बैंक के अनुसार, गरीबी वह स्थिति है जिसमें व्यक्ति न्यूनतम जीवन स्तर बनाए रखने के लिए आवश्यक संसाधनों से वंचित रहता है। भारत में गरीबी का आकलन समय-समय पर विभिन्न समितियों द्वारा निर्धारित गरीबी रेखा के आधार पर किया जाता रहा है।

भारत में गरीबी के प्रमुख कारण

1. तीव्र जनसंख्या वृद्धि

भारत की बढ़ती जनसंख्या के कारण रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा प्राकृतिक संसाधनों पर अत्यधिक दबाव पड़ता है। संसाधनों की तुलना में जनसंख्या अधिक होने से प्रति व्यक्ति आय कम हो जाती है।

2. बेरोज़गारी

रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध न होने के कारण बड़ी संख्या में लोग गरीबी का जीवन जीने के लिए विवश हो जाते हैं।

3. अशिक्षा एवं कौशल का अभाव

शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण की कमी के कारण लोगों को अच्छी नौकरियाँ नहीं मिलतीं तथा उनकी आय सीमित रहती है।

4. कृषि पर अत्यधिक निर्भरता

भारत की बड़ी आबादी कृषि पर निर्भर है, जबकि कृषि आज भी मानसून पर निर्भर है तथा इसमें आय अनिश्चित रहती है।

5. आर्थिक असमानता

देश में आय और संपत्ति का असमान वितरण गरीबी को बढ़ावा देता है। समाज का एक छोटा वर्ग अधिक संपत्ति रखता है जबकि बड़ी आबादी न्यूनतम आय पर जीवन बिताती है।

6. भ्रष्टाचार एवं प्रशासनिक कमजोरियाँ

गरीबी उन्मूलन की अनेक योजनाओं का पूरा लाभ पात्र लोगों तक नहीं पहुँच पाता।

7. महँगाई

आवश्यक वस्तुओं की बढ़ती कीमतों से गरीब परिवारों की क्रय शक्ति घट जाती है।

8. प्राकृतिक आपदाएँ

बाढ़, सूखा, चक्रवात, भूकंप आदि आपदाएँ विशेष रूप से ग्रामीण एवं कृषक परिवारों को आर्थिक रूप से कमजोर कर देती हैं।

9. पूँजी की कमी

उद्योगों एवं व्यवसायों के विकास के लिए पर्याप्त निवेश न होने से रोजगार और आय के अवसर सीमित रहते हैं।

10. सामाजिक कारण

जातिगत भेदभाव, लैंगिक असमानता तथा सामाजिक कुरीतियाँ भी गरीबी को बढ़ावा देती हैं।

- गरीबी के दुष्परिणाम
- कुपोषण एवं भुखमरी।
- शिक्षा का अभाव तथा बाल श्रम में वृद्धि।
- स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित रहना।
- अपराध एवं सामाजिक असुरक्षा में वृद्धि।
- महिलाओं और बच्चों का शोषण।
- सामाजिक असमानता का विस्तार।
- आर्थिक विकास की गति धीमी होना।
- जीवन स्तर में गिरावट।
- मानव संसाधनों का समुचित विकास न होना।
- सामाजिक अशांति और असंतोष।
- बेरोज़गारी का अर्थ

बेरोज़गारी वह स्थिति है जब कोई व्यक्ति कार्य करने के योग्य तथा इच्छुक होने के बावजूद उसे उसकी योग्यता एवं क्षमता के अनुरूप रोजगार प्राप्त नहीं होता।

भारत में बेरोज़गारी के प्रमुख प्रकार

1. खुली बेरोज़गारी

जब व्यक्ति को कोई भी रोजगार प्राप्त नहीं होता।

2. प्रच्छन्न (छिपी) बेरोज़गारी

जब एक कार्य में आवश्यकता से अधिक लोग लगे हों तथा कुछ लोगों के हटने पर भी उत्पादन में कोई कमी न आए।

3. मौसमी बेरोज़गारी

जब वर्ष के कुछ महीनों तक ही रोजगार उपलब्ध हो, जैसे कृषि क्षेत्र में।

4. शिक्षित बेरोज़गारी

जब उच्च शिक्षा प्राप्त युवाओं को उनकी योग्यता के अनुसार रोजगार नहीं मिलता।

5. संरचनात्मक बेरोज़गारी

अर्थव्यवस्था की संरचना में परिवर्तन के कारण रोजगार के अवसर कम हो जाना।

6. तकनीकी बेरोज़गारी

नई मशीनों एवं आधुनिक तकनीक के प्रयोग से श्रमिकों की आवश्यकता कम हो जाना।

7. अल्प रोजगार (Underemployment)

जब व्यक्ति अपनी योग्यता से कम स्तर का कार्य करने के लिए विवश हो।

भारत में बेरोज़गारी के प्रमुख कारण

- तीव्र जनसंख्या वृद्धि।
- उद्योगों का धीमा विकास।
- शिक्षा प्रणाली का रोजगारोन्मुख न होना।
- कौशल विकास का अभाव।
- कृषि पर अत्यधिक निर्भरता।
- पूँजी एवं निवेश की कमी।
- आधुनिक तकनीक एवं स्वचालन।
- ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित रोजगार।
- आर्थिक असमानता।
- सरकारी एवं निजी क्षेत्र में सीमित रिक्तियाँ।
- बेरोज़गारी के दुष्परिणाम
- गरीबी और भुखमरी में वृद्धि।
- राष्ट्रीय आय में कमी।
- युवाओं में निराशा एवं मानसिक तनाव।
- अपराध, नशाखोरी एवं सामाजिक असंतोष में वृद्धि।
- प्रतिभा का पलायन (Brain Drain)।
- मानव संसाधनों का दुरुपयोग।
- आर्थिक विकास की गति में कमी।
- परिवारों की आर्थिक स्थिति कमजोर होना।
- गरीबी एवं बेरोज़गारी का आपसी संबंध
- गरीबी और बेरोज़गारी एक-दूसरे को बढ़ाने वाली समस्याएँ हैं।
- बेरोज़गारी → आय में कमी → गरीबी।

- गरीबी → शिक्षा और कौशल की कमी → रोजगार का अभाव।
- रोजगार का अभाव → फिर से गरीबी।
- इस प्रकार यह एक गरीबी का दुष्चक्र (Cycle of Poverty) बन जाता है।

गरीबी एवं बेरोज़गारी दूर करने के उपाय

1. रोजगार के नए अवसरों का सृजन

औद्योगीकरण, सेवा क्षेत्र, पर्यटन, सूचना प्रौद्योगिकी, हरित ऊर्जा तथा लघु उद्योगों को बढ़ावा देकर बड़े पैमाने पर रोजगार उत्पन्न किए जाएँ।

2. कृषि का आधुनिकीकरण

सिंचाई, उन्नत बीज, आधुनिक मशीनें, जैविक खेती, भंडारण तथा कृषि आधारित उद्योगों का विकास किया जाए।

3. कौशल विकास

युवाओं को तकनीकी, डिजिटल तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाए।

4. शिक्षा में सुधार

शिक्षा को रोजगारोन्मुख बनाया जाए तथा उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यक्रम तैयार किए जाएँ।

5. स्वरोज़गार को प्रोत्साहन

स्टार्टअप, MSME, कुटीर उद्योग तथा स्वयं सहायता समूहों को वित्तीय सहायता एवं प्रशिक्षण प्रदान किया जाए।

6. महिला सशक्तिकरण

महिलाओं को शिक्षा, ऋण, प्रशिक्षण तथा रोजगार के समान अवसर उपलब्ध कराए जाएँ।

7. जनसंख्या नियंत्रण

परिवार नियोजन तथा जनसंख्या शिक्षा को बढ़ावा दिया जाए।

8. ग्रामीण विकास

ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क, बिजली, इंटरनेट, स्वास्थ्य, शिक्षा तथा उद्योगों का विस्तार किया जाए।

9. सामाजिक सुरक्षा

गरीब परिवारों को स्वास्थ्य बीमा, पेंशन, खाद्यान्न, आवास एवं शिक्षा सहायता उपलब्ध कराई जाए।

10. भ्रष्टाचार पर नियंत्रण

सरकारी योजनाओं में पारदर्शिता एवं जवाबदेही सुनिश्चित की जाए।

11. संतुलित क्षेत्रीय विकास

पिछड़े क्षेत्रों में विशेष आर्थिक पैकेज तथा औद्योगिक निवेश को बढ़ावा दिया जाए।

12. उद्यमिता का विकास

युवाओं को नौकरी खोजने के बजाय रोजगार देने वाला बनने के लिए प्रेरित किया जाए।

भारत सरकार द्वारा संचालित प्रमुख योजनाएँ

- महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा)
- प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY)
- स्किल इंडिया मिशन
- स्टार्टअप इंडिया
- स्टैंडअप इंडिया
- प्रधानमंत्री मुद्रा योजना
- प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (PMEGP)
- दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना (DDU-GKY)
- राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM)
- प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना (PMGKAY)

निष्कर्ष

गरीबी और बेरोज़गारी भारत की सबसे गंभीर सामाजिक एवं आर्थिक चुनौतियों में से हैं। इनका समाधान केवल सरकारी प्रयासों से संभव नहीं है, बल्कि समाज, निजी क्षेत्र, शैक्षणिक संस्थानों और प्रत्येक नागरिक की सक्रिय भागीदारी भी आवश्यक है। रोज़गार सृजन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल विकास, कृषि एवं उद्योगों का संतुलित विकास, महिला सशक्तिकरण, स्वरोज़गार को प्रोत्साहन तथा प्रभावी सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ इन समस्याओं के समाधान के प्रमुख आधार हैं।

यदि सरकार की योजनाओं का ईमानदारी से क्रियान्वयन किया जाए, भ्रष्टाचार पर नियंत्रण रखा जाए और युवाओं को उनकी क्षमता के अनुसार अवसर प्रदान किए जाएँ, तो भारत न केवल गरीबी और बेरोज़गारी को काफी हद तक कम कर सकता है, बल्कि समावेशी, आत्मनिर्भर, न्यायपूर्ण और सतत विकास के लक्ष्य को भी सफलतापूर्वक प्राप्त कर सकता है। यह केवल आर्थिक विकास ही नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और मानवीय गरिमा की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम होगा।